GK/GS का

महा संग्राम

HISTORY

जैन धर्म और बौद्ध धर्म
(JAINISM & BUDDHISM)

हमारे **TOPIC EXPERT** के साथ

देखें शाम 07:00 बजे

LIVE

BY GS GURU

जैन धर्म

Jainism

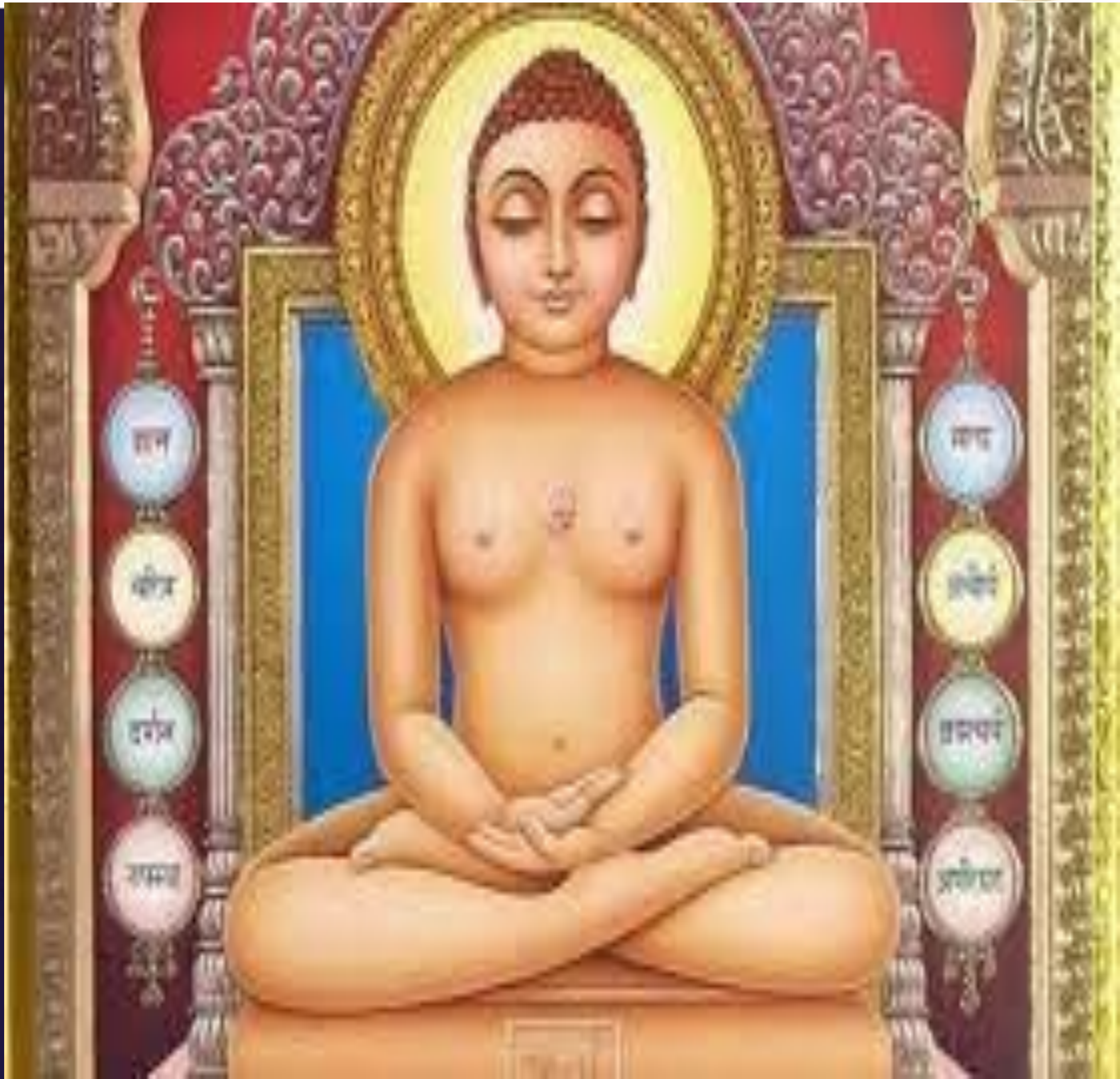

प्रवर्तक (Founder)

- जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- Rishabhdev was the founder and first Tirthankara of Jainism.
- तीर्थंकर- जो स्वयं तप के माध्यम से आत्मज्ञान प्राप्त करते है और जो संसार रूप सागर से पार लगाने वाले तीर्थ की रचना करते है, वह तीर्थंकर कहलाते हैं। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए थे।
- Tirthankaras – Those who attain self-knowledge through austerity and who create a pilgrimage that crosses the ocean in the form of the world, are called Tirthankaras. There were a total of 24 Tirthankaras in Jainism.

प्रमुख जैन तीर्थंकर और प्रतीक

Major Jain Tirthankaras and Symbol

क्रम (SL)	नाम(Name)	प्रतीक(Symbol)
1st	ऋषभदेव Rishabhdev	सांड Bull
23rd	पार्श्वनाथ Parshavnath	सांप का फन Snake hood
24th	महावीर स्वामी Mahavir Swami	शेर Lion

पार्श्वनाथ/ Parshvanath

- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।
- Parshvanath was the 23rd Tirthankara of Jainism.
- पिता - अश्वसेन (काशी के राजा) /
- Father- Ashwasen (King of Kashi)
- इन्हें झारखंड के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई। सम्मेद शिखर तीर्थ, भारत के झारखंड प्रदेश के गिरिडीह जिले में मधुबन क्षेत्र में स्थित है।
- He attained knowledge at the summit of Jharkhand. Sammed Shikhar Teerth is located in the Madhuban region in Giridih district of Jharkhand state, India.

- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने 4 नियम बताएं जिसे चतुरायण धर्म कहा गया।
- After attaining knowledge, he told 4 rules, which is known as Chaturayan Dharma.
- हिंसा ना करना/ do not commit violence
- सदा सत्य बोलना/ always telling the truth
- चोरी ना करना/ don't steal
- संपत्ति ना रखना/ not possessing property
- पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से लगभग 250 वर्ष पहले हुए थे।
- Parshvanath was about 250 years before Mahavir Swami.

Imp

पहले तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव, अष्ट प्रातिहार्य सह
(अपरनाम आदिनाथ)

શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથાય નમઃ

महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं जिन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।
- The 24th and last Tirthankara of Jainism is Mahavir Swami, who is said to be the real founder of Jainism.
- सांसारिक जीवन:- महावीर स्वामी का जन्म 540 ईसा पूर्व में कुंडग्राम (वैशाली) में हुआ था।
- Worldly life:- Mahavir Swami was born in 540 BC at Kundagram (Vaishali).

महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- पिता:- सिद्धार्थ, पत्नी:- यशोदा, माता: त्रिशला, पुत्री:- प्रियदर्शनी, दामाद:- जमाली, भाई:- नंदिवर्धन।
- Father:- Siddhartha, Wife:- Yashoda, Mother:- Trishala, Daughter:- Priyadarshini, Son-in-law:- Jamali, Brother:- Nandivardhana
- महावीर स्वामी जी के पिता कुंडग्राम के ज्ञात्रिक वंश के राजा थे।
- Mahavir Swamiji's father was the king of Jantrik dynasty of Kundagram.

महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- महावीर स्वामी जी के बचपन का नाम वर्धमान था।
- Mahavir Swamiji's childhood name was Vardhaman.
- 72 वर्ष (468 B.C.) की उम्र में, महावीर ने पावापुरी नामक क्षेत्र में निर्वाण प्राप्त किया।
- At the age of 72 years (468 B.C.), Mahavira attained Nirvana in the area known as Pawapuri.

आध्यात्मिक जीवन

Spiritual life

- महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की उम्र में माता पिता की मृत्यु के पश्चात अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से अनुमति लेकर सन्यास जीवन को स्वीकारा था। 12 वर्षों के कठिन तपस्या के बाद महावीर स्वामी जी को ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे तपस्या करते हुए ज्ञान की प्राप्ति हुई और ज्ञान प्राप्ति को 'कैवल्य' कहा गया।इसी समय से महावीर स्वामी अर्हत(पूज्य), निरग्रंथ (बंधनहीन), जिन (विजेता) कहलाए।

आध्यात्मिक जीवन

Spiritual life

- After the death of his parents at the age of 30, Mahavir Swami accepted the sanyasa life after taking permission from his elder brother Nandivardhan. After 12 years of hard penance, Mahavir Swami ji attained knowledge by doing penance under the Sal tree on the banks of river Rijupalika and the attainment of knowledge was called “Kaivalya”. From this time Mahavir Swami was called Arhat (worshipped), Nirgranth (bondless), Jin (winner).

आध्यात्मिक जीवन (Spiritual life)

- महावीर स्वामी जी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए। इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में दिया और अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- Mahavir Swamiji gave his sermons in Prakrit language. He gave the first sermon in Rajgir and the last sermon in Pavapuri.
- महावीर स्वामी का प्रथम भिक्षु उनका दामाद जमालि बना।
- The first monk of Mahavir Swami became his son-in-law Jamali.

महावीर के 5 सिद्धांत/ (Five Doctrines of Mahavir)

ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी जी ने कुल 5 नियम बताएं जिसे पंचायन धर्म कहा गया :

(1) सत्य (सत्य) /Satya (Truth)

(2) अहिंसा (अहिंसा) /Ahinsa (Non – Violence)

(3) अस्तेय (चोरी न करें) /Asteya (Do not Steal)

(4) अपरिग्रह (संपत्ति का अधिग्रहण न करें)/ Aparigraha (Do not acquire property)

(5) ब्रह्मचर्य - महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया /Brahmacharya – Added by Mahavira Swami

महावीर के त्रिरत्न/ Three Jewels of Mahavira

- सम्यक दर्शन - यथार्थ ज्ञान के प्रति श्रद्धा ही सम्यक दर्शन है।
- Samyak Darshan - Shraddha is the perfect philosophy of true knowledge.
- सम्यक ज्ञान - सत्य तथा असत्य का ज्ञान ही सम्यक ज्ञान है।
- Samyaka Gyan -Knowledge of truth and untruth is right knowledge.
- सम्यक आचरण / चरित्र- अहितकर कार्यों का निषेध तथा हितकारी कार्यों का आचरण ही सम्यक चरित्र है।
- Samyaka Acharan/Charita –Prohibition of harmful actions and conduct of beneficial actions is the right character.

जैन संप्रदाय /Jain Sects

श्वेतांबर / Svetambara	दिगंबर / Digambara
• श्वेत वस्त्र धारण करने वाले Put on white dress.	• नग्न रहने वाले Keep themselves naked.
• इस संप्रदाय के नेता स्थूलबाहु थे Leader of this sect was Sthulabahu.	• इस संप्रदाय के नेता भद्रबाहु थे Leader of this sect was Bhadrabahu.

जैन साहित्य / Jain Literature

- मुख्य रूप से दिगंबर साहित्य और श्वेतांबर साहित्य के बीच विभाजित।
- Primarily divided between Digambara literature and Svetambara literature.
- मुख्य रूप से मगधी प्राकृत, संस्कृत, मराठी, तमिल, राजस्थानी, धुंदरी, मारवाड़ी, हिंदी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम में मौजूद हैं।
- Exists mainly in Magadhi Prakrit, Sanskrit, Marathi, Tamil, Rajasthani, Dhundari, Marwari, Hindi, Gujarati, Kannada, Malayalam.
- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है और इस साहित्य की भाषा प्राकृत है।
- Jain Literature is called as Aagam and the language of this literature is Prakrit.

जैन संगीतियां

Jain Councils

प्रथम संगीति/1st Council

- वर्ष - 300 ई.पू./
- स्थान- पाटलिपुत्र
- राजा - चंद्रगुप्त मौर्य
- अध्यक्ष - स्थूलभद्र
- कार्य - जैन धर्म के 12 अंग संपादित किए गए। पहली जैन संगीति में, जैन धर्म दो भागों में विभाजित था, दिगंबर और श्वेतांबर ।

- Place- Pataliputra
- King- Chandragupta Maurya
- Chairman- Sthulabahu
- Outcome- 12 Angas of Jainism were edited . In the first Jain Sabha, Jainism was divided into two parts, Digambara and Shwetambar.

द्वितीय संगीति/2nd Council

- वर्ष - 512 A.D.
- स्थान - वल्लभी (गुजरात)
- अध्यक्ष - देवर्षि क्षमाश्रमण / देवीरीधमानी
- कार्य - जैन साहित्य अंत में संकलित

- Year – 512 A.D.
- Place – Vallabhi (Gujarat)
- Chairman – Devarsi Kshmasrmn/ Devridhimani
- Outcome – Jain literature finally compiled

बौद्ध धर्म

Buddhism

गौतम बुद्ध /Gautam Buddha

- जन्म - 563 ई.पू., लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
- बचपन का नाम - सिद्धार्थ
- पिता - शुद्धोधन (शाक्य वंश के राजा)
- माता - महामाया
- पालक माता - प्रजापति गौतमी
- पत्नी - यशोधरा

- **Birth** – 563 B.C, Lumbini (Kapilvastu)
- **Childhood Name** – Siddhartha
- **Father** – Shuddodhana (King of Shakya Dynasty)
- **Mother** – Mahamaya
- **Foster Mother** – Prajapati Gautami
- **Wife** – Yashodhara

- उन्होंने 29 साल की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और वह गया में निरंजना नदी के किनारे एक पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान कर रहे थे, तभी उन्हें बोध सत्य का पता चला।
- He left his home at the age of 29 and he was meditating under a **Peepal tree** on the bank of river **Niranjana** at **Gaya**, he came across the desired truth.
- इस प्रकार उन्होंने अपने महान कार्य या महाभिनिश्क्रमण (घर को छोड़कर) किया और एक भटकते हुए तपस्वी बन गए।
- Thus he performed his great going or **Mahabhinishkramana (leaving of home)** and became a wandering ascetic.
- प्रथम शिक्षक /**First Teacher** - अलार कलाम /Alara Kalama
- द्वितीय शिक्षक /**Second Teacher** - रुद्रका रामपुत्त /Rudraka Ramputta

पहला उपदेश/ First Sermon

- वाराणसी के पास सारनाथ में। इस घटना को **धर्मचक्रप्रवर्तन** के रूप में जाना जाता है।
- सारनाथ में गौतम बुद्ध ने संघ की स्थापना की।
- अधिकतम उपदेश - श्रावस्ती (कोशल)
- पहली महिला शिष्य थी - प्रजापति गौतमी
- In Saranath near Varanasi. This event known as **Dharmchakrapravartan**.
- In Sarnath Gautan Buddha established Sangha.
- Maximum Sermon – Shravasti (Koshala)
- First Lady Pupil was – Prajapati Gautami

4 आर्य/महान सत्य (4 Arya/ Nobel Truths)

बुद्ध का शिक्षण/ The Teaching of Buddha

1. दुःख /Dukha Or Sorrow
2. दुःख समुदय (दुःख का कारण)/Dukha Samudaya (Cause of Sorrow)
3. दु: ख निरोध (दु: ख निवारण)/ Dukha Nirodh(Prevention of Sorrow)
4. दु: ख निरोधगामी पतिपदा(दुःख निवारण का मार्ग)/ Dukha Nirodh Gami Patipada(The path of Prevention of Sorrow)

बौद्ध संप्रदाय/ Buddha Sects

- 383 ईसा पूर्व में पहली बार बौद्ध धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित किया गया था
- In 383 B.C first time Buddhism was divided in two sects :

(1) सीताविरा – परंपरा/ Sithavira – Traditionals

(2) महासंघिका – परिवर्तनक /Mahasanghika - Changers

बौद्ध संप्रदाय/ Buddha Sects

- प्रथम शताब्दी ईसवी में चतुर्थ बौद्ध संगीति में ,बौद्ध धर्म फिर से दो संप्रदायों में विभाजित हो गया /
- In the first century AD, in the Fourth Buddhist Council, Buddhism again split into two sects:

1) हीनयान /Hinyana

2) महायान /Mahayana

Difference Between Hinayana and Mahayana

हीनयान Hinyana	महायान Mahayana
यह संप्रदाय बुद्ध के मूल शिक्षण में विश्वास करता है। This sect believes in original teaching of Buddha.	यह संप्रदाय बुद्ध को भगवान मानता है और इनकी पूजा करता है। This sect considers Buddha as God and worships him.
मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं। Don't believe in Idol Worship	मूर्ति पूजा में विश्वास करता है। Believes in Idol Worship.
यह कठोर मार्ग के माध्यम से व्यक्तिगत मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करता है। They tries to attain personal salvation through a rigorous path.	यह सरल मार्ग से मोक्ष की प्राप्ति करने का प्रयास करता है। They tries to attain salvation by the simple path
यह बौद्ध धर्म का प्राचीन रूप है। This is an ancient form of Buddhism	यह बौद्ध धर्म का नवीन रूप है। This is an New form of Buddhism

बुद्ध के जीवन की 5 महान घटनाओं के प्रतीक

Symbols of 5 great events of Buddha's life

- जन्म - हाथी, कमल, बैल
- महान प्रस्थान (**महाभिनिष्क्रमण**) - अश्व
- आत्मज्ञान - बोधि वृक्ष
- प्रथम उपदेश (**धर्मचक्रप्रवर्तन**) - पहिया
- मृत्यु (**महापरिनिर्वाण**) - स्तूप, पाद छाप

- Birth – Elephant, Lotus, Bull
- Great Departure (Mahabhinishkramana) – Horse
- Enlightment – Bodhi Tree
- First Sermon (Dharmchakrapravartan) – Wheel
- Death (Mahaparinirvana) – Stupa, Foot Print

बौद्ध साहित्य / Buddhist Literature

- बौद्ध साहित्य को त्रि - पिटक के नाम से जाना जाता है।
- Buddhist literature is known as Tri-Pitaka.
- बौद्ध साहित्य की भाषा पाली है।
- The language of Buddhist literature is Pali.

बौद्ध साहित्य /Buddhist Literature

(1) **विनय पिटक :** विनय पिटक की विषय वस्तु भिक्षुओं के लिए मठवासी नियम हैं।

(2) **सुत्त पिटक:** ऐतिहासिक बुद्ध और उनके प्रमुख शिष्यों के उपदेशों और कथनों के समूहबद्ध संग्रह शामिल हैं।

(3) **अभिधम्म पिटक** : यह दर्शन में बौद्ध धर्म के दर्शन और सिद्धांत से संबंधित है। यह मोग्गलिपुत्ततिस्स द्वारा लिखा गया था।

(1) Vinaya Pitaka: The contents of the Vinaya Pitaka are monastic rules for monks. This is the Book of Discipline.

(2) Sutta Pitaka: Contains grouped collections of sermons and saying of the historical Buddha and his chief disciples.

(3) Abhidhamma Pitaka: It deals with the philosophy and doctrine of Buddhism in philosophy. It was written by Moggaliputttis.

जातक साहित्य / Jatak Literature

- एक अन्य साहित्य को जातक पुस्तकों या साहित्य के रूप में जाना जाता था।
- Another literature was known as Jatak books or literature.
- जातक लोकसाहित्य के बहुत करीब हैं और उनमें कविताओं में बुद्ध के पिछले जन्मों के किस्से हैं।
- Jataks are very much close to folk literature and they contain the tales of previous births of Buddha in poems.
- कुल 547 जातक हैं।
- There are 547 Jataks.

बौद्ध संगीतियाँ /Buddhist Councils

संगीति/ Council	वर्ष /Year	स्थान /Location	राजा /King	अध्यक्ष /President
1st	483 BC (ई.पू.)	राजगीर/ Rajgir	अजातशत्रु/ Ajatshatru	महाकश्यप/ Mahakashyap
2nd	383 BC (ई.पू.)	वैशाली/ Vaishali	कालाशोक/ Kalashok	सबाकामी/ Sabakami

बौद्ध संगीतियाँ /Buddhist Councils

संगीति/ Council	वर्ष /Year	स्थान /Location	राजा /King	अध्यक्ष /President
3rd	255 BC(ई.पू.)	पाटलिपुत्र/ Patliputra	अशोक/ Ashok	मोग्गलिपुत्ततिस/ Moggaliputttis
4th	120-144 AD(ई.)	कुण्डलवन / Kundalvan	कनिष्क/ Kanishak	वसुमित्र-अध्यक्ष/ Vasumitra-President अश्वघोष-उपाध्यक्ष/ Ashwaghosh-Vice President

Q.1 What was the real name of Gautam Buddha?

गौतम बुद्ध का वास्तविक नाम क्या था ?

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-1) 6 मार्च, 2018 (II- पाली)

(a) Siddhartha / सिद्धार्थ

(b) Mahendra /महेंद्र

(c) Shree Dutt / श्रीदत्त

(d) Vishal Dutt / विशालदत्त

- गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी नामक वन में 563 ई. पू. में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन शाक्यगण के प्रधान थे तथा माता माया देवी कोलिय गणराज्य (कोलिय वंश) की कन्या थीं। गौतम बुद्ध वचपन में सिद्धार्थ के नाम से जाने जाते थे। 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में 'महाभिनिष्क्रमण' कहा गया है।
- Gautam Buddha was born in a forest named Lumbini near Kapilvastu in 563 BC. Happened in. His father Shuddhodhan was the head of Shakyagana and mother Maya Devi was the daughter of Koliya republic (Kolia dynasty). Gautam Buddha was known as Siddhartha in childhood. At the age of 29, he left home, which is called 'Mahabhinishkraman' in Buddhist texts.

Q.2 Buddha was born in______.

बुद्ध का जन्म ______ में हुआ था।

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-I) 22 मार्च, 2018 (I- पाली)

(a) Vaishali / वैशाली

(b) Lumbini/लुंबिनी

(c) Kapilavastu / कपिलवस्तु

(d) Patliputra / पाटलिपुत्र

- गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी नामक वन में 563 ई. पू. में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन शाक्यगण के प्रधान थे तथा माता माया देवी कोलिय गणराज्य (कोलिय वंश) की कन्या थीं। गौतम बुद्ध वचपन में सिद्धार्थ के नाम से जाने जाते थे। 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में 'महाभिनिष्क्रमण' कहा गया है।
- Gautam Buddha was born in a forest named Lumbini near Kapilvastu in 563 BC. Happened in. His father Shuddhodhan was the head of Shakyagana and mother Maya Devi was the daughter of Koliya republic (Kolia dynasty). Gautam Buddha was known as Siddhartha in childhood. At the age of 29, he left home, which is called 'Mahabhinishkraman' in Buddhist texts.

Q.3 In ancient times, during the Buddhist period, who was the ruler of Kapilavastu?

प्राचीन काल में बौद्ध काल के दौरान, कपिलवस्तु के शासक कौन थे ?

S.S.C. ऑनलाइन कांस्टेबल GD 1 मार्च, 2019 (III - पाली)

(a) Sakya/ शाक्य

(b) Lichchavi/लिच्छवि

(c) Gupta /गुप्त

(d) Maurya/मौर्य

- प्राचीन काल में बौद्धकाल के दौरान कपिलवस्तु के शासक शाक्य थे। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुंबिनी ग्राम में शाक्य क्षत्रिय कुल में 563 ई.पू. में वैशाख पूर्णिमा को हुआ था।
- In ancient times, the rulers of Kapilavastu during the Buddhist period were Shakyas. Mahatma Buddha, the originator of Buddhism, was born in 563 BC in the Shakya Kshatriya clan in Lumbini village of Kapilvastu, located in the Terai of Nepal. I was born on Vaishakh Purnima.

Q.4 Where did Gautam Buddha finally attained enlightenment?

गौतम बुद्ध को ज्ञान कहां प्राप्त हुआ था ?

S.S.C. ऑनलाइन MTS (T-I) 3 अक्टूबर, 2017 (II- पाली)

(a) Sarnath / सारनाथ

(b) Bodh Gaya / बोधगया

(c) Varanasi/वाराणसी

(d) Lumbini / लुंबिनी

- बोधगया में छः वर्षों की कठिन साधना के पश्चात 35 वर्ष की अवस्था में वैशाख पूर्णिमा की रात्रि को एक पीपल के वृक्ष के नीचे गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद वे 'बुद्ध' कहलाए।
- At the age of 35, Gautam attained enlightenment under a Peepal tree on the night of Vaishakh Purnima, after six years of hard meditation in Bodhgaya. After attaining knowledge, he was called 'Buddha'.

Q.5 Mahayana is related to-

महायान संबंधित है-

S.S.C. ऑनलाइन MTS (T-I) 10 अक्टूबर, 2017 (II - पाली)

(a) Jainism/ जैन धर्म

(b) Buddhism/बौद्ध धर्म

(c) Sikhism/सिख धर्म

(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

- महायान का संबंध बौद्ध धर्म से है। चौथी बौद्ध संगीति के पश्चात बौद्ध धर्म दो शाखाओं में बंट गया था। ये दो शाखाएं थीं - महायान तथा हीनयान।
- Mahayana is related to Buddhism. After the fourth Buddhist council, Buddhism was divided into two branches. These were the two branches - Mahayana and Hinayana.

Q.6 At which place did Gautam Buddha passed away?

किस स्थान पर गौतम बुद्ध की मृत्यु हुई थी ?

S.S.C. ऑनलाइन MTS (T-I) 13 अक्टूबर, 2017 (II - पाली)

(a) Bodh Gaya / बोधगया

(b) Kushinagar/कुशीनगर

(c) Lumbini/लुंबिनी

(d) Sarnath / सारनाथ

- गौतम बुद्ध की मृत्यु कुशीनगर में हुई थी। बोधगया में उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, सारनाथ में उन्होंने प्रथम बार उपदेश दिया था तथा लुंबिनी में उनका जन्म हुआ था।
- Gautam Buddha died in Kushinagar. He attained enlightenment at Bodh Gaya, preached for the first time at Sarnath and was born at Lumbini.

Q.7 At which of the following places did Lord Buddha give his first sermon on the Four Noble Truths?

निम्न में से किस स्थल पर भगवान बुद्ध ने चार महान सत्य पर अपना प्रथम उपदेश दिया था ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 20 अगस्त, 2021 (1-पाली)

(a) Sarnath / सारनाथ

(b) Lumbini / लुंबिनी

(c) Rajgir / राजगीर

(d) Bodh Gaya / बोधगया

- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध ने सारनाथ (ऋषिपत्तन) में चार महान सत्य पर अपना प्रथम उपदेश दिया था। इस प्रथम उपदेश को 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा जाता है।
- After attaining enlightenment, Lord Buddha gave his first sermon on the Four Noble Truths at Sarnath (Rishipatna). This first sermon is called 'Dharmachakrapravartan'.

Q.8 The first Buddhist Council was held at______.

प्रथम बौद्ध परिषद कहां आयोजित हुई थी ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 20 अगस्त, 2021 (II-पाली)

(a) Kashmir / कश्मीर

(b) Rajgriha / राजगृह

(c) Pataliputra/पाटलिपुत्र

(d) Vaishali / वैशाली

- बुद्ध की प्रथम बौद्ध परिषद का आयोजन मगध सम्राट अजातशत्रु के समय में राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में किया गया था। इस बौद्ध परिषद की अध्यक्षता महाकस्सप ने की थी।
- The first Buddhist council of Buddha was organized in the Saptaparni cave of Rajagriha during the time of Magadha emperor Ajatashatru. This Buddhist council was presided over by Mahakassapa.

Q.9 The First Buddhist Council is said to have been patronised by:

कहा जाता है कि प्रथम बौद्ध परिषद को______ द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।

S.S.C. ऑनलाइन M.T.S. (T-I) 13 अक्टूबर, 2021 (II-पाली)

(a) Chandragupta Maurya/चंद्रगुप्त मौर्य

(b) Ashoka/अशोक

(c) Ajatashatru / अजातशत्रु

(d) Porus /पोरस

- प्रथम बौद्ध संगीति (प्रथम बौद्ध परिषद) बुद्ध की मृत्यु के तत्काल बाद राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में हुई। इस समय मगध का शासक अजातशत्रु था। इस संगीति की अध्यक्षता महाकस्सप ने की तथा इसमें बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनंद और उपालि भी उपस्थित थे। इसमें बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन हुआ तथा उन्हें सुत्त और विनय नामक दो पिटकों में विभाजित किया गया। आनंद तथा उपालि क्रमशः धर्म और विनय के प्रमाण माने गए।
- The First Buddhist Council (First Buddhist Council) took place in the Saptaparni cave of Rajagriha immediately after the death of the Buddha. At this time the ruler of Magadha was Ajatashatru. This council was presided over by Mahakassapa and the chief disciples of Buddha Ananda and Upali were also present in it. In this the teachings of Buddha were compiled and they were divided into two Pitakas named Sutta and Vinaya. Anand and Upali were considered to be the proof of Dharma and Vinay respectively.

Q.10 Which Buddhist Council was held soon after the death of Gautam Buddha?

गौतम बुद्ध की मृत्यु के तत्काल बाद किस बौद्ध परिषद को आयोजित किया गया था ?

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-I) 7 फरवरी, 2017 (III- पाली)

(a) Fourth / चौथी

(b) Third / तीसरी

(c) Second / दूसरी

(d) First / पहली

Q.11 The language in which Buddha preached?

बुद्ध के उपदेश किस भाषा में हैं?

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-I) 15 जनवरी, 2017 (III-पाली)

(a) Hindi/हिंदी

(b) Pali/पालि

(c) Urdu/उर्दू

(d) Hebrew/हिब्रू

- महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के प्रवर्तक थे। उन्होंने प्रचार के लिए जनसाधारण की भाषा पालि को अपनाया, जो प्राकृत का एक रूप थी।
- Mahatma Buddha was the originator of Buddhism. He adopted the language of the common people, Pali, which was a form of Prakrit, for propaganda.

Q.12 With which religion is Kaivalya associated?

'कैवल्य' कौन-से धर्म से संबंधित है ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 7 सितंबर, 2016 (I-पाली)

(a) Buddhism / बौद्ध

(b) Jainism / जैन

(c) Hinduism/हिंदू

(d) Sikhism / सिख

जैन धर्म में 'पूर्ण ज्ञान' के लिए कैवल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। महावीर स्वामी को 12 वर्षों की कठोर तपस्या तथा साधना के पश्चात जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था। फलतः वे 'केवलिन' कहलाए।

In Jainism, the word Kaivalya has been used for 'absolute knowledge'. Mahavir Swami had attained Kaivalya (complete knowledge) under a sal tree on the banks of river Rijupalika near village Zrimbhik after 12 years of rigorous penance and meditation. As a result, he was called 'Kevalin'.

Q.13 According to the Jain Philosophy, the term 'Jina' means______.

जैन दर्शन के अनुसार, 'जिन' शब्द का अर्थ______है।

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 7 मार्च, 2020 (III- पाली)

(a) Lord / भगवान

(b) The conqueror / विजेता

(c) Free from fetters / जंजीर से मुक्त

(d) Worthy / योग्य

जैन दर्शन के अनुसार, जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ विजेता है। जैन संस्थापकों को 'तीर्थकर जबकि जैन महात्माओं को 'निर्ग्रंथ' कहा जाता है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर माने जाते हैं, जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार किया। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

According to Jain philosophy, the word Jain is derived from the Sanskrit word 'Jin', which means conqueror. Jain founders are called 'Tirthankaras' while Jain Mahatmas are called 'Nirgraths'. A total of 24 Tirthankaras are considered in Jainism, who propagated Jainism from time to time. The first Tirthankara of Jainism was Rishabhdev or Adinath and the last Tirthankara was Mahavir Swami.

Q.14 In which Indian Religion, there are 24 Tirthankaras?

किस भारतीय धर्म में 24 तीर्थंकर हुए थे?

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-1) 7 फरवरी 2017 (1-पाली)

(a) Jainism / जैन

(b) Hinduism/ हिंदू

(c) Buddhism / बौद्ध

(d) Sikhism / सिख

Q.15 Who is considered the first Tirthankara of Jainism?

जैन धर्म का पहला तीर्थंकर किसे माना जाता है ?

S.S.C. ऑनलाइन स्टेनोग्राफर, 13 सितंबर, 2017 (II - पाली)

(a) Parshwanath/ पार्श्वनाथ

(b) Rishabhdev/ऋषभदेव

(c) Mahavir Swami/महावीर स्वामी

(d) Ajitnath/अजितनाथ

Q.16 Lord Mahavira was born in present-day state of________.

भगवान महावीर का जन्म वर्तमान समय के __________राज्य में हुआ था।

S.S.C. JE इलेक्ट्रिकल परीक्षा 10 दिसंबर, 2020 (II- पाली)

(a) Punjab / पंजाब

(b) Gujarat / गुजरात

(c) Maharashtra/महाराष्ट्र

(d) Bihar / बिहार

Q.17 Mahavira, who was known in Pali literature as Nighantha Nataputta, founded a religion called______.

महावीर, जिन्हें पाली साहित्य में निघंता नाटापुत्त से जाना जाता है, ने _____नामक धर्म की के नाम स्थापना की थी।

S.S.C. ऑनलाइन CGL (T-I) 17 अगस्त, 2021 (III-पाली)

(a) Sikhism / सिख धर्म

(b) Bahai / बहाई धर्म

(c) Zoroastrianism/पारसी धर्म

(d) Jainism/जैन धर्म

- महावीर, जिन्हें पाली साहित्य में निघंता नाटापुत्त के नाम से जाना जाता है। महावीर स्वामी जैन धर्म में 24वें तीर्थंकर थे, जबकि जैन धर्म की स्थापना ऋषभदेव ने की थी।
- Mahavira, who is known as Nighanta Nataputta in Pali literature. Mahavir Swami was the 24th Tirthankara in Jainism, while Jainism was founded by Rishabhdev.

Q.18 Where did Lord Mahavira attain salvation?

भगवान महावीर को मोक्ष निम्न में से किस स्थान पर प्राप्त हुआ था ?

S.S.C. ऑनलाइन M.T.S. (T-I) 13 अक्टूबर, 2021 (II- पाली)

(a) Pawapuri/पावापुरी

(b) Shravanabelagola / श्रवणबेलगोला

(c) Sonagiri/ सोनागिरि

(d) Mount Abu/माउंट आबू

जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का मोक्ष स्थान (निर्वाण) पावापुरी में स्थित है। भगवान महावीर ने 527 ई.पू. अर्थात 72 वर्ष की आयु में बिहार के पावापुरी में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ।

The place of salvation (Nirvana) of Mahavir Swami, the originator of Jainism, is situated in Pawapuri. Lord Mahavira in 527 B.C. That is, at the age of 72, he attained Nirvana (salvation) on Kartik Krishna Amavasya in Pawapuri, Bihar.

Q.19 A collective term used by the Jains for their sacred books is-

जैनियों द्वारा अपने पवित्र ग्रंथों के लिए सामूहिक किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?

S. S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 10 सितंबर, 2016 (I-पाली)

(a) Prabandhas / प्रबंध

(b) Nibandhas / निबंध

(c) Angas/अंग

(d) Charits/चरित

- प्रायः सभी प्रारंभिक धार्मिक जैन साहित्य (आगम) प्राकृत की विशिष्ट शाखा अर्ध-मागधी भाषा में लिखा गया है। इसके बारह अंग अर्ध-मागधी में ही हैं। बाद में जैन धर्म ने प्राकृत भाषा को अपनाया। जैनियों द्वारा अपने पवित्र ग्रंथों के लिए सामूहिक रूप से अंग शब्द का प्रयोग किया था।
- Almost all early Jain religious literature (Agama) is written in the Ardha-Magadhi language, a distinct branch of Prakrit. Its twelve parts are in Ardha-Magadhi only. Later Jainism adopted the Prakrit language. The term Anga was used collectively by the Jains for their sacred texts.

Q.20 The famous Dilwara temples of Mount Abu are a sacred pilgrimage place for the-

माउंट आबू स्थित मशहूर दिलवाड़ा मंदिर निम्नलिखित में से किस समुदाय का पवित्र तीर्थस्थल है ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 1 सितंबर 2016 (I-पाली)

(a) Buddhists / बौद्ध

(b) Jains / जैन

(c) Sikhs / सिक्ख

(d) Parsis / पारसी

- माउंट आबू, सिरोही (राजस्थान) स्थित मशहूर दिलवाड़ा मंदिर जैन धर्म का पवित्र तीर्थस्थल है। इनमें सबसे प्रसिद्ध विमल वासाही मंदिर है। चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम (1022-1064 ई.) के सामंत विमलशाह ने इसे बनवाया था। माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर संगमरमर के बने हैं।
- The famous Dilwara Temple at Mount Abu, Sirohi (Rajasthan) is a holy pilgrimage center of Jainism. The most famous of these is the Vimal Vasahi Temple. It was built by Vimalshah, a feudatory of Chalukya ruler Bhimdev I (1022-1064 AD). The Dilwara Jain temples of Mount Abu are made of marble.